बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2020 - 2021/22
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
यूनिट - 4 (d)
प्रकरण - **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं विद्यालयी वातावरण**
व्याख्यान सं. - 10

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

Continued from previous class...

विद्यालयी वातावरण के आयाम

2. **अध्यापक का व्यवहार** - अध्यापक के व्यवहार के भी चार प्रकार बताए गए हैं जो निम्न प्रकार हैं -

   a. **मुक्ति/निर्मुक्तता (Disengagement)**- इस स्थिति में अध्यापक कार्य की परिस्थिति में स्वयं को अलग रखता है। वह कुछ कार्यों में प्रधानचार्य से अलग रहता है। यह संभव है की किसी कारणवश उसे पूर्व सूचना न मिल सकी हो। ऐसे में विद्यालय की प्रगति शिथिल हो जाती है, विकास बाधित हो जाता है।

   b. **बाधा/रुकावट (Hindrance)** - ऐसी स्थिति तब उत्पन्न होती है जब प्रधानाध्यापक द्वारा अध्यापक पर अनावश्यक कार्यों का दायित्व सौंपा जाता है। उसे ऐसा महसूस होता है की उसे व्यर्थ के दायित्व देकर परेशान किया जा रहा है। ऐसे में विद्यालय का विकास बाधित होता है।

   c. **सद्भाव/उत्साह (Spirit)** - ऐसी स्थिति में अध्यापक में उत्साह बना रहता है। उसे महसूस होता है की उसके सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर दी गयी है। अतः वह भी विद्यालय के कार्यों का निष्पादन उत्साहपूर्वक करता है। ऐसे में विद्यालय का विकास होता रहता है तथा विद्यालय वातावरण स्वच्छ बना रहता है।

   d. **आत्मीयता/लगाव (Intimacy)** - इसमें शिक्षकों की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। विद्यालय में सौहार्दपूर्ण वातावरण बना रहता है। किसी शिक्षक की अनुपस्थिति या किसी अन्य कारण से कार्य के अपूर्ण रहने की दशा में उसे शिक्षकों द्वारा पूर्ण किया जाता है। अतः विद्यालय का विकास निर्बाध गति से होता रहता है।

माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में उन्नयन हेतु सुझाव

माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखने इसका सर्वव्यापीकरण एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। सर्वशिक्षा अभियान की तर्ज पर राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा की अनुप्रयोगात्मक उपादेयता से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसकी गुणवत्ता में सुधार हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित किये जा सकते हैं :-

1. शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर बालक एवं बालिकाएं महत्वपूर्ण हैं तथा उनका शैक्षणिक विकास उनकी अभिरुचि व योग्यता के अनुरूप ही किया जाना चाहिए।

2. प्राथमिक स्तर के शुरुआती दौर में ही विषय वस्तु को महत्व दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम हस्तांतरण में निर्देशात्मक-अनुदेशात्मक शैली के स्थान पर सृजनात्मक शैली के द्वारा होना चाहिए ताकि बच्चे स्वयं ज्ञान का सृजन कर सकें।

3. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्मृति स्तर (रटने पर ज़ोर) के शिक्षण से अवबोध के स्तर की ओर उन्नमुख किया जाना चाहिए।

4. शिक्षण पद्धति को सिर्फ "चॉक एवं टॉक (Chalk & Talk)" से सूचना व संचार तकनीक (इ-एजुकेशन) की तरफ प्रतिमान परिवर्तन किया जाए।

5. ट्युशन-कोचिंग को पूर्णतः प्रतिबंधित कर शिक्षक व छात्रों में शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व संस्कृति विकसित की जाए।

6. प्राथमिक शिक्षा की भांति ही माध्यमिक शिक्षा के लिए निश्चित धन का आवंटन किया जाए।

7. भाषा शिक्षण में परस्पर संवाद को महत्व दिया जाए ताकि शिक्षण के प्रारंभिक सोपान से ही पढ़ने व लिखने का कौशल विकसित हो सके।

समाप्त